# लैंगिक तटस्थता

प्रियंका पाराशर (स0अ0)
प्रा0वि0 चन्दपुर बिचपुरी, वि0खं0
बिथरी चैनपुर, बरेली

**उद्देश्य–**

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यह पाया जाता है कि समुदाय विशेष के कुछ परिवारों की बेटियाँ विद्यालय के वार्षिकोत्सव, खेलकूद तथा अन्य मंचीय गतिविधियों में भाग नहीं लेती है। जब उनसे कारण पूछा जाता है, तो वे कहती हैं कि "घर पर मना किया गया है"। ग्रामीण परिवेश में पुरुष सदस्यों की निर्णायक भूमिका और पारंपरिक सोच के कारण समाज में यह धारणा गहराई से बैठी हुई है कि कुछ कार्य केवल लड़कों के लिए ही उपयुक्त हैं और कुछ केवल लड़कियों के लिए इसी प्रकार विद्यालय में कई लड़के भी घर के कार्यों जैसे सफाई, सजावट, भोजन परोसने या कक्षा में सहयोग देने जैसे कार्यों में भाग लेने से हिचकिचाते है। वे इन्हें "लड़कियों के काम" मानते है और स्वयं को केवल खेल या बाहरी गतिविधियों तक सीमित रखना चाहते है।

विद्यालय, जो शिक्षा का मंदिर है और जहाँ लैंगिक समानता और एक–दूसरे के लिए सम्मान करना सिखाया जाता है, वहाँ इस प्रकार के वतावरण में बदलाव करने और बढ़ती लैंगिक रूढ़िवादिता को समाप्त करके, कम उम्र से ही बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने की बहुत आवश्यकता है। अतः लैंगिक तटस्थता को बढ़ावा देने और पितृसत्ता के पुराने मानदंडों को तोड़ने हेतु कुछ नवीन करने का प्रयास किया गया। ग्रामीण परिवेश में रहकर यह दिखाने का प्रयास किया गया कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय है। बच्चों की मानसिकता में बदलाव हेतु इस बेस्ट प्रेक्टिस के अन्तर्गत यह बताने का प्रयास किया गया कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है और बचपन से ही लिंग आधारित पक्षपात करके उनकी आकांक्षाओं को सीमित न करें।

**क्रियान्वयन–**

इसी मनोवैज्ञानिक पहलू को ध्यान में रखते हुए शिक्षिका ने सर्वप्रथम 'Gender Neutrality' पुस्तक की संरचना की जो "Teach Them Early" की अवधारणा पर आधारित थी। इस पुस्तक में कहानियों और कविताओं के पात्रों के रूप में विद्यार्थियों के वास्तविक चित्र का प्रयोग किया गया।

इस बेस्ट प्रेक्टिस के अगले चरण में प्रत्येक दिन प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के बाद विद्यालय में बच्चों से इस पुस्तक की एक–एक कविता या कहानी का पठन कराया जाता है। इस कार्यक्रम में समुदाय तथा बच्चों के अभिभावकों को भी जोड़ने का प्रयास किया गया और उन्हें प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में आमंत्रित कर, उनके सामने ही विद्यार्थियों द्वारा 'Gender Neutrality Book' की कविताओं एवं कहानियों का सस्वर पाठन और प्रस्तुतीकरण करवाया जाता है। साथ ही उन्हें वह पुस्तक भी दिखाई जाती हैं जिसमें उनके स्वयं के बच्चों के चित्रों का प्रयोग किया गया है। इस गतिविधि से यह पाया गया कि अभिभावक जब अपने बच्चों के चित्र और उनकी सहभागिता देखते है तो वह अत्यन्त गौरवान्वित होते है। इस प्रकार समुदाय में यह संदेश और भी गहराई से पहुँचता है कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय है। शिक्षिकों द्वारा अभिभावकों को यह भी समझाया जाता है कि किसी भी बच्चे की प्रतिभा या क्षमता को लिंग आधारित मानकों द्वारा सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

इस प्रकार विद्यालय ने न केवल बच्चों में अपितु अभिभावकों और समुदाय में भी लैंगिक समानता की चेतना को विकसित करने का प्रयास किया है।

**पुस्तक में दी गई कहानियों और कविताओं के उदाहरण–**

'Gender Neutrality' पुस्तक की एक कविता में पिता जी को रसोई में खाना बनाते और माँ को अखबार पढ़ते व पिता जी को चाय बनवाते हुए दिखाया गया। दूसरी गतिविधि में लड़कों को घर के कार्य करते हुए तथा लड़कियों को रोबोट और स्पोर्ट्स कार से खेलते हुए दिखाया गया। एक कहानी में यह संदेश दिया गया कि हर बच्चा अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार कोई भी करियर चुन सकता है। जैसे लड़की इंजीनियर, ड्राइवर या पायलट बन सकती है, और लड़का नर्स, शिक्षक या फैशन डिजाइनर भी बन सकता है। इन सभी कहानियों और कविताओं में दिये गये उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी भी कार्य या भूमिका को लिंग के आधार पर सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

प्रस्तुत बेस्ट प्रैक्टिस के अन्तर्गत अन्य गतिविधियाँ भी करायी जाती हैं जैसे– "निशाना लगाओ" के माध्यम से बच्चे विभिन्न क्षेत्रों– खेल, विज्ञान, व्यापार, पुलिस, राजनीति, समाजसेवा आदि में प्रसिद्ध व्यक्तियों में सम्मिलित महिलाओं और पुरुषों के साथ समाज में विशिष्ट योगदान देने वाले ट्रांसजेंडर एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले व्यक्तियों जैसे– महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग आदि को चिन्हित करते हैं और उनके जीवन चित्रों के माध्यम से यह प्रेरणा लेते हैं कि हर व्यक्ति, चाहे उसका लिंग या शारीरिक अवस्था जैसी भी हो, वह समाज के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।

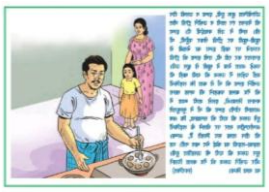

**प्रभाव–**

लैंगिक तटस्थता विषयक प्रस्तुत बेस्ट प्रैक्टिस के अन्तर्गत करायी गयी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के मन से पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिताएँ समाप्त हुई और उन्होंने पारंपरिक लिंग भूमिकाओं व सामाजिक रूढ़िवादी मान्यताओं को खुलकर चुनौती दी। यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से विद्यालय की सभी गतिविधियों में प्रदर्शित होता है। अब छात्राएं विद्यालय के नृत्य, खेल, वाद–विवाद और अन्य मंचीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करती है। वहीं लड़के भी सफाई, सजावट और सहयोगात्मक कार्यों में उत्साहपूर्वक सहभागी बनते है। कविताएँ, कहानियाँ और खेल–आधारित गतिविधियाँ बच्चों में संवेदनशीलता, समानता, सहयोग और आत्मविश्वास की भावनाओं को गहराई से स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुई है। यह ने केवल एक शैक्षणिक संसाधन है, बल्कि यह सामाजिक चेतना और मूल्यपरक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन गई हैं, जिसने विद्यालय, परिवार और समुदाय तीनों स्तरों पर समानता और सहयोग के नई सोच की स्थापना की हैं।

विद्यालय का वातावरण पहले से अधिक समावेशी, प्रेरणादायक और सहयोगपूर्ण बन गया है और विद्यालय ने Gender Neutral Learning Environment का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। बच्चों में पारंपरिक लैंगिक भेदभाव टूटने लगा और उनका चिंतन व्यापक तथा संतुलित हुआ है। एक ऐसा वातावरण विकसित हुआ जहाँ लिंग किसी के अवसरों या सीमाओं का निर्धारण नहीं करता, बल्कि सभी को समान रूप से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है।